यह कैसा सम्मान है?

महेश कुमार शर्मा

अपने काम के सिलसिले में मुझे राजस्थान के उच्च प्राथमिक स्तर तक के सरकारी विद्यालयों में अक्सर जाने का अवसर मिलता रहता है। मैं जहां भी इन विद्यालयों में गया मुझे कुछ और मिला न मिला, एक चीज जरूर मिली या दिखी। वह यह है कि कक्षा में पहुंचते ही धीमे या फिर बहुत तेज आवाज में बच्चों का गुड मॉर्निंग सर, गुड मॉर्निंग दीदी या मैडम कहना। प्रदेश भर में जिन-जिन सरकारी विद्यालयों में जाने का अवसर मिला वहां यह कॉमन फीचर है। उल्लेखनीय है कि दोपहर में कहीं-कहीं गुड आफ्टर नून की गूंज, अनूगूंज भी इन कक्षाओं में सुनाई दे जाती है।

अब यह कहा जा सकता है कि इसमें क्या दिक्कत है या किसी को क्या आपत्ती है? इसमें न कोई दिक्कत है न आपत्ती। लेकिन यह कोई सहज व्यवहार नजर नहीं आता। उन विद्यालयों को इस पर ध्यान भी देना चाहिए और सोचना चाहिए कि कहीं यह सब रटे रटाए शब्दोच्चारण की रस्म अदायगी के तौर पर तो नहीं हो रहा है। या कुछ ऐसा तो बच्चों को नहीं कहा या समझा दिया गया कि जब भी कोई शिक्षक या बाहरी व्यक्ति आपकी कक्षा में प्रवेश करे बस खड़े हो जाओ और बोल दो गुड मॉर्निंग या गुड आफ्टर नून।

इस सिलसिले में एक राजकीय विद्यालय (कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय) में हुए अनुभव को यहां साझा करता हूं। इस विद्यालय में मैं सुबह दस बजे पहुंचा। अध्यापकों के साथ औपचारिक अभिवादन के बाद मैं विद्यालय के उस कक्ष की और बढ़ा जिधर से प्रार्थना की आवाज आ रही थी। मेरे साथ ही विद्यालय के एक शिक्षक भी उसी तरफ बढ़ चले। यहां आपको यह बताना उचित होगा कि शैक्षिक सहयोग उपलब्ध करवाने के सिलसिले में मुझे अक्सर इस तरह के विद्यालयों में जाना होता है। मैं प्रार्थना सत्र में शामिल हो गया। प्रार्थना सत्र के दौरान होने वाली गतिविधियों के पश्चात मैने लड़कियों को नमस्ते करते हुए अपना परिचय दिया। सभी बालिकाओं नें भी एक सुर में ''गुड मॉर्निंग सर'' बोला। लगभग डेढ़ घन्टे तक मैं इसी जगह पर सामूहिक रूप से इनके साथ काम करता रहा। इसके बाद उप समूह कार्य हेतु मैंने लड़कियों को अपनी-अपनी कक्षाओं में भेज दिया। थोड़ी देर बाद मैं एक कक्षा में इसलिए गया कि लड़कियों को कहीं कोई मदद की जरूरत तो नहीं है। जैसे ही मैं कक्षा में घुसा सभी लड़कियों ने एक साथ उठते हुए कहा, ''गुड़ मॉर्निंग सर''। मैने कहा, ''अरे! मैं तो सुबह से ही आपके साथ था, फिर अब क्यूं गुड मॉर्निंग कर रही हो?'' वे कुछ नहीं बोलीं। मैंने कहा, ''बैठ जाओ'' तो वो सब बैठ गईं। ये कक्षा छह की लड़कियां थीं। मेरे मन में विचार आया कि यह सब नई हैं, इसी सत्र में आई हैं इसलिए ऐसा किया होगा लेकिन मन नहीं माना। मैं पास ही के दूसरे कमरे में गया जहां कक्षा सात की लड़कियां काम कर रही थीं। फिर वही हुआ। वैसे के वैसे लड़कियां उठीं और वैसे ही बोला, ''गुड मॉर्निंग सर''। अब मैं परिकल्पना प्रयोग की प्रक्रिया में आ चुका था। अतः मैं एक और कक्ष में घुसा। फिर वही दोहराया गया। ज्यों का त्यों। मैंने हर एक कक्ष में लड़कियों से अचम्भा करते हुए कहा, ''अरे! हम तो सुबह से ही साथ थे तो फिर से गुड मॉर्निंग क्यूं?'',

''क्या ऐसा करना चाहिए?'', ''क्या आपको किसी ने कहा है ऐसा करने को?'' मेरे सवालों को एक-दो शिक्षक भी सुन रही थीं। वे भी कुछ नहीं बोलीं।

विद्यालयों में अक्सर उन्हीं छात्रों से पांच-सात बार इस तरह का औपचारिक अभिवादन मिल जाता है जिनसे आप कई बार मिल चुके हैं। यांत्रिक अभिवादन की इस बोझिल प्रक्रिया में सिवा समय की बरबादी के संभवतः कुछ नहीं होता। इस स्थिति पर बालिकाओं और शिक्षकों से बात भी की कि क्या हम इस पर कुछ सोच सकते है। क्यूं हम इन अतार्किक प्रक्रियाओं को दोहराते रहें! उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा कि यह तो सम्मान करने का तरीका है।

मगर किसका सम्मान है इसमें? शिक्षक का? यदि हां, तो बच्चों के सम्मान का क्या? इस पर सोचने का समय तो न हमारी व्यवस्था के पास है न उन व्यक्तियों के पास है जो दबाव से स्थापित इस तथाकथित सम्मान को पाकर गदगद हुए जाते हैं। खैर हालात और हकीकत अपनी-अपनी जगह है और विचार अपनी जगह।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की शिक्षकों ने इस पर सोचा और शुरुआत इस तरह हुई कि हम यह कैसा सम्मान पा रहे हैं? एक ही स्थान पर एक ही व्यक्ति क्यूं बार-बार हमें नमस्कार, गुड मॉर्निंग आदि किए जा रहा है? क्या यह दिल से किया गया सम्मान है! अगर नहीं तो फिर क्या है? क्या कोई दबाव है? बच्चों पर दबाव या कहें उस वर्ग पर दबाव जो अपनी मर्जी, अपनी इच्छा से कुछ भी करने को आज़ाद नहीं है। यहां तक कि सम्मान करने को भी नहीं। इस प्रक्रिया का एक खतरा यह भी हो सकता है कि हम खुश होने, सम्मान करने की वास्तविक ज़रूरतों और भावनाओं को तो भूलते चले जाएं और कृत्रिमता को अपनी वास्तविकता बना लें।

एक शिक्षक ने संभवतः बहुत हिम्मत से कहा कि मैं इस पर लगातार सोचती रही हूं कि क्यूं हम एक ही जगह पर, एक ही दिन में, एक ही बालिका से बार-बार अभिवादन करवाते हैं, सुनते हैं। यह तो बड़ा अजीब है। मान लो यह सम्मान है तो हमारे घर में जब कोई बड़ा-बुजुर्ग, कोई मेहमान, कोई आगन्तुक या किसी भी उम्र का कोई व्यक्ति आता है तो क्यूं नहीं हम उसको बार-बार सलाम, नमस्ते करते! मैंने कहा, ''करके देख लीजिए।'' हो सकता है आने वाला आप पर हंसे और फिर आप भी हंसें। या आने वाला इस व्यवहार को स्वयं का अपमान समझे और संभावना यह भी है कि वह व्यक्ति आपके घर या जहां भी आप हैं वहां से दूर, बाहर जाकर आपके बारे में कहे, उफ! बड़े अजीब सनकी लोग हैं!

फिर शिक्षा में यह कौनसा अनिवार्य अभ्यास है जो बच्चों को बिना सोचे समझे सिखाया जा रहा है। सम्मान का रट्टा लगवाया जा रहा है। मैंने और भी कई शिक्षकों से जानने की कोशिश की कि हर बार जब भी कोई शिक्षक कक्षा में प्रवेश करता/करती है तो क्या पूरी कक्षा के बच्चे उठकर गुड मार्निंग (अधिकांशतः गुड मॉर्निंग), गुड आफ्टर नून या नमस्ते करते हैं? शिक्षकों नें जवाब तो किसी उपलब्धि से उपजे संतोष को अपने चेहरे पर लाते हुए दिया और कहा, ''हां! करते हैं ना। बच्चे खड़े होकर, हर बार अपने शिक्षक को नमस्कार करते हैं।'' मेरे अगले सवाल, कि कोई बार-बार आपको नमस्कार करे तो क्या ऐसा करना ठीक है? पूछने पर संतोष की पपड़ी में थोड़ी दरार दिखाई दी। सोचने की प्रारंभिक अवस्था में यह संभव है कि आपमें कुछ दरके, कुछ टूटने-तड़कने से पूर्व का खिंचाव या तनाव बनने लगे। शिक्षकों ने कहा, ''हां! ठीक है।''

मैंने मन में सोचा, ''ठीक तो नहीं है'', लेकिन स्कूलों में तो यही होता है। मैंने जानने की कोशिशि की क्या कोई सरकारी आदेश या सर्कुलर इस हेतु निकला है कि जब भी शिक्षक कक्षा में प्रवेश करे तब सारे बच्चे एक साथ खड़े होकर अभिवादन करें। पता चला नहीं, ऐसा तो कोई आदेश नहीं है। तो सवाल यह है कि यह सब क्यूं हो रहा है? बिना किसी सरकारी, लिखित, ऊपरी आदेश के?

ऐसे सवालों पर चर्चा जब भी आगे बढ़ती है, ये ही वाक्यांश प्रमुखता से सुनाई देते रहे हैं, चलता आ रहा है, हम भी उठते थे, हमने तो इस पर कभी सोचा नहीं है, इससे बच्चे सम्मान करना सीखते हैं। यहां भी ऐसा ही हुआ। इस आखरी वाक्य पर फिर सवाल उठता है कि क्या सम्मान सिखाने की या सम्मान की औपचारिकता करने में दक्ष बना देने की भी कोई यांत्रिक प्रक्रिया है? सम्मान सिखाने की वह कौनसी प्रक्रिया है जो यह बताती है कि बच्चों को बार-बार गुड मॉर्निंग, गुड आफ्टर नून या नमस्ते कहकर सम्मान करना चाहिए और उसका अभ्यास हमारी कक्षाओं मे निरन्तर जारी है। क्या इसके बरक्स बच्चों का सम्मान करने की भी कोई लिखित, अलिखित परंपरा या प्रक्रिया है हमारी तमाम सभ्यता में?

जब बच्चों से बात की तब शुरुआती सवाल था, ''आपकी कक्षा में जब कोई शिक्षक आता है या आती है तब आप क्या करते हैं?'' बच्चों ने बताया कि सब खड़े होकर गुड मार्निंग बोलते हैं। ''जब यही शिक्षक एक पीरियड पढ़ाने के बाद, अगले किसी पीरियड में फिर से आपकी कक्षा में आए तो?'' ''फिर से खड़े हो कर नमस्ते करते हैं।'' ''तो क्या एक ही शिक्षक एक ही दिन में तीन-चार या और ज्यादा बार आपकी कक्षा में आए तो उतनी ही बार खड़े हो कर नमस्ते करते हैं?'' बच्चों का जवाब हां में पाकर पूछा, ''अच्छा क्यों करते है बार-बार नमस्ते, गुड मार्निंग या कुछ और?'' बच्चे मुस्कुराते हुए कहते हैं, ''पता नहीं लेकिन हम तो ऐसे ही करते हैं।''

मजेदार बात यह थी कि जितने भी बच्चों (लगभग दो सौ बच्चों) से मैंने यह सब सवाल किए उनमें से कोई भी अपने घर-परिवार, आस-पास, अपनी भाषा, बोली में अपने किसी बड़े-बुजुर्ग का सम्मान इस तरह नहीं करता था। बच्चों ने इस यांत्रिक प्रक्रिया के कुछ राज और अपनी होशियारियों को भी बताया। एक बात सभी बच्चों ने कहा कि ऐसे बार-बार एक ही आदमी को नमस्कार कहना और बार-बार खड़े होना उन्हें अच्छा तो बिल्कुल नहीं लगता। बच्चों ने अपने से अलग कुछ बच्चों का नाम बताते हुए कहा कि कुछ बच्चे तो उठते भी नहीं हैं। कुछ बच्चे यह देखने का प्रयास करते हैं कि यदि शिक्षक उनकी तरफ देख नहीं रहे हैं तो बैठा भी रहा जा सकता है। कुछ तो उठने का उपक्रम भर करते हैं। कुछ बच्चों ने तो यह भी कहा कि हर कक्षा का कोई पसंदीदा और कोई नापसंद शिक्षक होता है। यह नापसंद शिक्षक वह होता है जो बच्चों को डांटता है, डराता है और बच्चों का सम्मान तो बिल्कुल नहीं करता है। पता चला कि शिक्षा का अधिकार कानून तो बन गया है लेकिन कुछ शिक्षक आज भी बच्चों पर हाथ छोड़ने तक से बाज नहीं आते। हम खुद सोच सकते हैं कि ऐसे शिक्षक को कौन बच्चा प्यार, सम्मान देना चाहेगा। कौन खड़ा होना चाहेगा। यह तो प्रथा चली आ रही है कि कक्षा में प्रवेश करते ही शिक्षक को सम्मान का एक झोंका तो स्पर्श करे ही करे, भले औपचारिक ही सही, बेमन ही सही।

मैंने मन में विचार किया कि बच्चों को इतनी आज़ादी तो हो ही कि वो अपने पसंदीदा शिक्षक के लिए ही खड़े हों। यहां नापसंद शिक्षक को अपमानित करवाने का मानस नहीं है, वरन यह महसूस करवाने का है कि शिक्षक अपने व्यवहार और प्रक्रियाओं पर भूल सुधार कर सके। अच्छे खासे सेल्फ रियलाइजेशन की प्रक्रिया को जन्म दे सकती है, यह थोड़ी सी आजादी। अब जबकि सारी कक्षा, सारे बच्चे एक ही दिन में दसियों बार खड़े हो-हो कर सम्मान का सैल्यूट करेंगे तो शिक्षक भी कैसे सोच पाएगा कि उससे कहां भूल चूक हो रही है। अपने शिक्षण कार्य में, अपने तरीकों में, अपनी भाषा और व्यवहार में। बच्चों से पेश आने के तरीकों में।

बिना सोचे-समझे, पढ़ते-लिखते चले जाने और बिना भावनात्मक आवेग और लगाव के सम्मान करने-कराने की यह आदत शायद हमारे स्कूलों में चल रही कक्षाओं से ही जन्म लेती है। हां, इस आलेख को यहां तक पढ़ कर यह विचार आ सकता है कि तो क्या शिक्षक के कक्षा में आने पर बच्चों को खड़ा नहीं होना चाहिए? तो क्या बच्चों को अपने शिक्षकों को गुड मॉर्निंग, नमस्कार आदि नहीं करना चाहिए? क्या शिक्षकों को एक बार भी नमस्कार नहीं करना चाहिए? मेरा निजी विचार जानना चाहते हैं तो है, ''हां, सोचा जा सकता है''। हम या शायद हम में से कोई भी सम्मान विरोधी तो नहीं होगा। लेकिन सम्मान की यांत्रिकता, बोझिलता और रट्टामार प्रथा के पक्ष में भी कोई नहीं होगा।

शिक्षकों ने भी जब इस मुद्दे पर बात की तो यही विचार रखा कि क्यूं ना सिर्फ इतना भर ही औपचारिक रूप से तय किया जाए कि एक दिन में सिर्फ एक बार ही जब शिक्षक, बच्चों का पहली बार सामना हो तब ही अभिवादन कर शिक्षकों के प्रति सम्मान प्रकट कर दिया जाए। प्रार्थना, असेंबली में अधिकांश बच्चे और समय पर विद्यालय पहुंच सकने वाले अधिकांश शिक्षक एक दूसरे से रूबरू होते हैं। इसी मौके पर क्यों नहीं यह सम्मान अदा कर दिया जाए! क्या ऐसा होना संभव है? हो तो क्यूं नहीं सकता। सोचें तो क्या कुछ नहीं हो जाता! या फिर इतना भर किया जा सकता है कि कोई शिक्षक कक्षा-कक्ष में जब पहली बार आए, सिर्फ तब ही अभिवादन कर लिया जाए। इसके बाद यदि वही शिक्षक दूसरी, तीसरी या फिर अगली बार आए तो बच्चों को उठने की अनिवार्यता से मुक्त रखा जाए।

अब एक नया सवाल सामने खड़ा था। जब शिक्षक के अगली बार कक्षा में आने पर बच्चे नहीं उठें, नमस्कार नहीं करें तब शिक्षक क्या करे? बच्चे क्या करें? हां, पुरानी आदतें बदलने में थोड़ा समय लगता है। थोड़ा जोर आता है और थोड़ा दिल भी दुख सकता है। यहां बंधी-बंधाई प्रक्रियाओं से बाहर नए तरीके से कुछ करने और रचने का अवसर पैदा किया जा सकता है। इसमें शिक्षक को थोड़ी मेहनत करने की, थोड़ा जागरूक रहने की आवश्यकता है, बस! क्यों ना कक्षा में अंदर आता हुआ शिक्षक बच्चों से कहे, कैसे हो? क्या चल रहा है? और यह भी कह कर शुरू कर सकता है कि चलिए आगे बढ़ते हैं! या फिर वो अपने कक्षा कार्य की जैसी योजना बनाकर आया है सीधे उस पर ही कार्य करने लग जाए। मुझे तो यह भी यकीन है कि कार्य की जरूरत और कार्य के क्रियान्वयन में ही शिक्षक और बच्चे इतना डूब जाएंगे कि उन्हें किसी बाहरी सम्मान की जरूरत ही महसूस नहीं होगी। जो शिक्षक डूबकर काम करते हैं वो शिक्षक हमेशा सम्मान से ही याद किए जाते हैं। ◆

लेखक परिचयः लगभग 20 वर्षों से आरंभिक शिक्षा के क्षेत्र में, मुख्य रूप से बालिका शिक्षा को लेकर काम कर रहे हैं और वर्तमान में संधान, जयपुर में कार्यरत हैं।

'शिक्षा विमर्श' द्वि-मासिक पत्रिका
स्वामित्व एवं अन्य सूचनाओं से संबंधित विवरण

घोषणा
फार्म-4 (नियम-8)

1.	प्रकाशन का स्थान	: जयपुर
2.	प्रकाशन अवधि	: द्वि-मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: सुश्री रीना दास
	नागरिकता	: भारतीय
	पता	: दिगन्तर, टोडी रमजानीपुरा, जगतपुरा, जयपुर-302017 राजस्थान
4.	प्रकाशक का नाम	: सुश्री रीना दास
	नागरिकता	: भारतीय
	पता	: दिगन्तर, टोडी रमजानीपुरा, जगतपुरा, जयपुर-302017 राजस्थान
5.	संपादक का नाम	: प्रमोद पाठक
	नागरिकता	: भारतीय
	पता	: 27 ए, एकता पथ, श्रीजी नगर, दुर्गापुरा, जयपुर-302018 राजस्थान
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	: दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति, टोडी रमजानीपुरा, जगतपुरा, जयपुर-302017 राजस्थान
7.	मुद्रणालय का नाम	: श्री राधे एन्टरप्राइजेज
	पता	: एफ-23-सी 5, इंडस्ट्रीयल एरिया मालवीया नगर, जयपुर-302017 राजस्थान

मैं रीना दास एतद् द्वारा घोषणा करती हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

4 मार्च, 2016 रीना दास
(प्रकाशक)